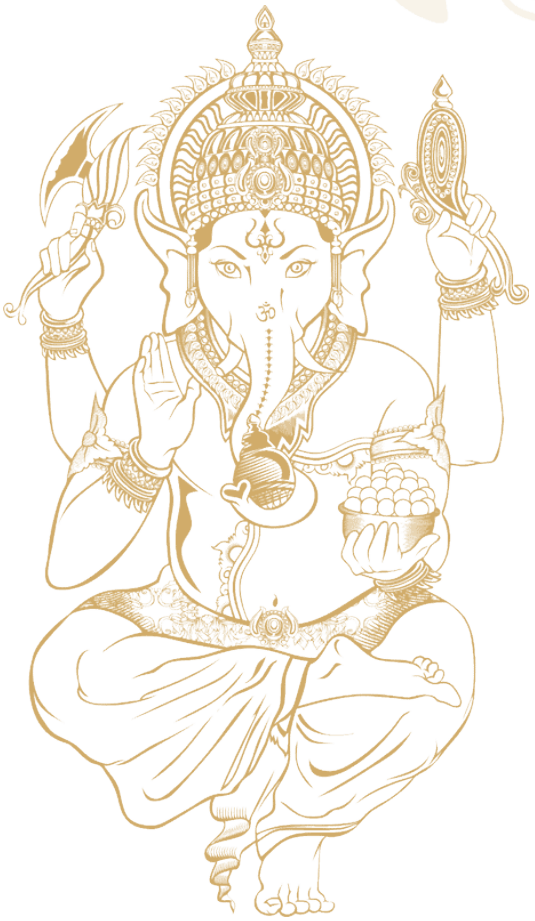

Kaushki

12 Oct 2025

12:00 PM

Muzaffarpur

Model: Baby-Horoscope **Order No: 119961701**

तिथि 12/10/2025 **समय** 12:00:00 **वार** रविवार **स्थान** Muzaffarpur **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:05
अक्षांश 26:07:00 उत्तर **रेखांश** 85:23:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** 00:11:32 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	13:35:54 घं
वेलान्तर	00:13:32 घं
सूर्योदय	05:46:06 घं
सूर्यास्त	17:23:29 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	कार्तिक
पक्ष	कृष्ण
तिथि	6
नक्षत्र	मृगशिरा
योग	परिघ
करण	वणिज

अवकहड़ा चक्र

गण	देव
योनि	सर्प
नाड़ी	मध्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	मार्जार
युँजा	पूर्व
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	की-कीर्ति
पाया(रा.-न.)	ताम्र-स्वर्ण
होरा	मंगल
चौघड़िया	काल

विंशोत्तरी

मंगल 0वर्ष 5मा 30दि

मंगल	12/10/2025
	13/04/2026
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	12/10/2025
चन्द्र	13/04/2026

योगिनी

संकटा 0वर्ष 6मा 25दि

संकटा	12/10/2025
	09/05/2026
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	12/10/2025
सिद्धा	09/05/2026

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			16:47:36	धनु	पूर्वाषाढ़ा	2	शुक्र	चंद्र	---	0:00			
सूर्य			24:58:23	कन्या	चित्रा	1	मंगल	राहु	सम राशि	1.85	अमात्य	पितृ	जन्म
चंद्र			05:42:53	मिथु	मृगशिरा	4	मंगल	चंद्र	मित्र राशि	1.01	पुत्र	मातृ	जन्म
मंगल			19:23:06	तुला	स्वाति	4	राहु	मंगल	सम राशि	1.03	भ्रातृ	भ्रातृ	सम्पत
बुध			13:59:03	तुला	स्वाति	3	राहु	बुध	मित्र राशि	0.99	मातृ	ज्ञाति	सम्पत
गुरु			29:27:49	मिथु	पुनर्वसु	3	गुरु	चंद्र	शत्रु राशि	1.27	आत्मा	धन	विपत
शुक्र			03:46:35	कन्या	उ०फाल्गुनी	3	सूर्य	शनि	नीच राशि	1.33	ज्ञाति	कलत्र	मित्र
शनि	व		02:43:23	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	राहु	सम राशि	1.01	कलत्र	आयु	विपत
राहु	व		23:42:51	कुंभ	पू०भाद्रपद	2	गुरु	शनि	मित्र राशि		---	ज्ञान	विपत
केतु	व		23:42:51	सिंह	पू०फाल्गुनी	4	शुक्र	शनि	शत्रु राशि		---	मोक्ष	वध

लग्न-चलित

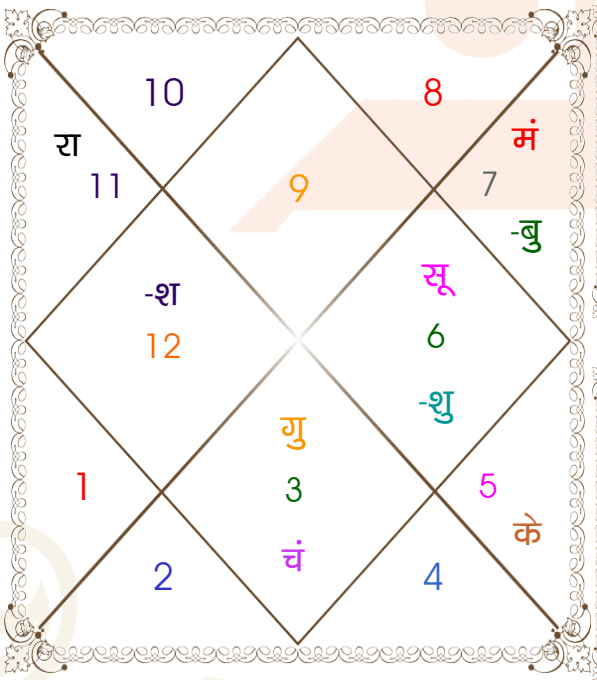

चन्द्र कुंडली

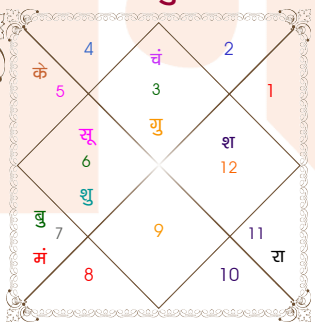

नवमांश कुंडली

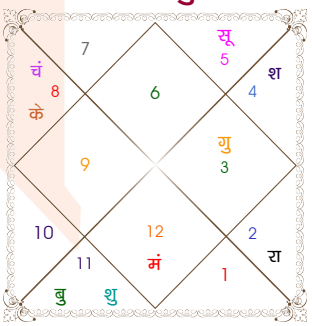

सर्वाष्टकवर्ग

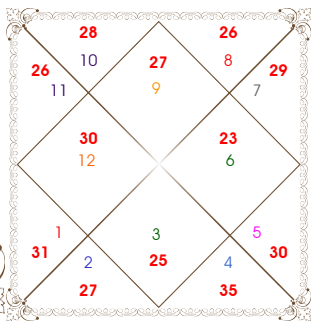

दशमांश कुंडली

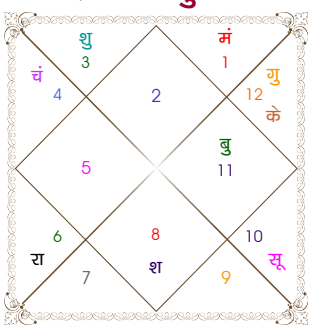

Shree Siddhivinayak Astro
Gola Bandh Road Muzaffarpur
9693608763
shreesiddhivinayakastro@gmail.com

नक्षत्रफल

आप मृगशिरा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में पैदा हुई हैं। अतः आपकी राशि मिथुन तथा राशि स्वामी बुध होगा। नक्षत्रानुसार आपका वर्ण शूद्र, वर्ग मार्जार, नाड़ी मध्य, योनि सर्प तथा देव गण होगा। नक्षत्र के चरण के अनुसार आपके जन्म नाम का आद्याक्षर "कि" या "की" होगा।

चतुरता तथा चंचलता स्वभाविक रूप से आप में विद्यमान रहेगी तथा जो भी कार्य आप करेंगी कुशलता पूर्वक उसे सम्पन्न करेंगी। धैर्य का आपमें अभाव नहीं रहेगा। परन्तु आपके अधिकांश कार्य कूरता एवं कठोरता से युक्त होंगे जिसे अन्य लोगों को कष्ट होंगे। आप तेज स्वभाव की होंगी तथा दूसरे आदमी का अपने समक्ष कोई भी अस्तित्व नहीं समझेंगी।

चतुरश्चपलो धीरः कूरकर्मा क्षुधातुरः।
अहंकारी परद्वेषी मृगशीर्णि भवेन्नरः।।
जातकदीपिका

अर्थात् मृगशिरा नक्षत्र में उत्पन्न जातक चतुर चंचल धैर्यवान, कूरकर्म करने वाला, भूख से व्याकुल, अहंकारी तथा अन्य जनों से द्वेष करने वाला होता है।

हूबहू नकल या प्रतिलिपि तैयार करने में आप अत्यन्त ही कुशल हो सकती है। साथ ही आप अपने समस्त सांसारिक कार्यों को स्वयं के बुद्धि बल एवं परिश्रम से सम्पन्न करने में सफल रहेंगी।

चपलश्चतुरो धीरः कूटकर्मस्वकर्मकृत।
अहंकारी परद्वेषी मृगे भवति मानवः।।
मानसागर

अर्थात् मृगशिरा नक्षत्र का जातक चंचल, चतुर, धैर्यवान, नकली वस्तु बनाने वाला, स्वार्थी, अहंकारी और द्वेषी होता है।

आप स्वभाव से ही भयभीत प्रकृति की होंगी तथा डर आपके मन में समाया रहेगा। आप एक चतुर तथा विदुषी महिला भी हो सकती हैं। उत्साह हमेशा आपके मन में व्याप्त रहेगा तथा इसी उत्साही प्रवृति के कारण आप जीवन में धनैश्वर्य तथा सुख की प्राप्ति करके उन्नति पथ पर अग्रसर होंगी।

चपलश्चतुरोभीरुः पटुरुत्साही धनी मृगे भोगी।
बृहज्जातकम्

अर्थात मृगशिरा नक्षत्रोत्पन्न व्यक्ति चंचल, चतुर, डरपोक, विद्वान, उत्साही धन, वैभव तथा ऐश्वर्य को भोगने वाला होता है।

आप स्वभाव से ही विनयशील होंगी तथा आपका सबके साथ विनम्र व्यवहार रहेगा। आप गुणों तथा गुणवान व्यक्ति के प्रति अतिशय रूप में अनुरक्त रहेंगी तथा उन्हें उचित सम्मान प्रदान करेंगी। आपकी प्रवृति न्यूनाधिक विलासी भी होगी तथा सम्पूर्ण भौतिक सुख संसाधनों से आप युक्त रहेंगी। उच्चाधिकारी या मंत्री वर्ग की आप प्रिय रहेंगी तथा इनसे पूर्ण सहयोग तथा सम्मान प्राप्त करेंगी। आप हमेशा सही रास्ते पर चलने का भी यत्न करेंगी।

शरासनाभ्यासरतो विनीतः सदानुरक्तो गुणिनां गणेषु।
भोक्तानृपस्नेहभरेण पूर्णः सन्मार्गवृतो मृगजात जन्मा।
जातकाभरणम्

अर्थात मृगशिरा नक्षत्र का मानव अस्त्र शस्त्र विद्या में पारंगत, नम्र, गुणों का आदर करने वाला, विलासी राजा का प्रिय और सन्मार्गगामी होता है।

आपका चित शान्त होगा तथा इधर उधर भ्रमण करना या यात्रा करना आपको अच्छा लगेगा। अतः आपका अधिकांश समय भ्रमण तथा यात्रा आदि में ही व्यतीत होगा।

चान्द्रे सौम्यमनोळटनः कुटिलदृक् कामातुरो रोगवान।
जातकपरिजातः

अर्थात मृगशिरा में उत्पन्न जातक सौम्यचित्त वाला घूमने फिरने या यात्रा करने वाला, कुटिल दृष्टि युक्त, कामपीड़ित तथा रोगी होता है।

आप ताम्रपाद में उत्पन्न हुई हैं। अतः आप आजीवन धन धान्य से सुसम्पन्न रहेंगी। आप पति के रूप में श्रेष्ठ एवं गुणवान पुरूष को प्राप्त करेंगी। साथ ही कई प्रकार के बहुमूल्य रत्नों एवं धातुओं तथा सोना, चांदी आदि से भी आप सुशोभित रहेंगी। आपका शारीरिक सौन्दर्य सुन्दर एवं आकर्षक रहेगा तथा स्वास्थ्य भी अच्छा होगा। आप एक विदुषी महिला होंगी तथा विविध प्रकार से चल अचल जायदाद या सम्पति की स्वामिनी बनेंगी। आप विविध प्रकार के भौतिक सुखसंसाधनों से युक्त रहेंगी एवं जीवन में प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग कर सकेंगी। आप की समस्त पुत्र तथा कन्या सन्ततियां सुन्दर एवं गुणवान होंगी एवं जीवन में आप संतति सुख अर्जित करने में भी सफल रहेंगी। इस प्रकार आपका परिवारिक जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा। आप एक सुशील स्वभाव की महिला होंगी तथा अन्य जनों से आपके हमेशा मधुर व्यवहार रहेगा।

मिथुन राशि में उत्पन्न होने के कारण आपकी आखें अल्प रक्तमय होकर काले रंग की होगी तथा नासिका भी ऊंची होगी। आप एक विदुषी महिला होंगी तथा कई शास्त्रों के विषय में आपको ज्ञान रहेगा। आप सन्देशों के भेजने तथा लाने के कार्य में चतुर होगी। सिर के बाल आपके घुंघराले होंगे तथा बुद्धि अत्यन्त ही तीव्र होगी। समाज में लोगों से आपका विनयशील तथा विनम्र व्यवहार रहेगा। अपनी तीक्ष्ण बुद्धि के द्वारा आप अन्य जनों के हृदय की बातों को समझने में सफल रहेंगी। आप हास्यप्रिय होंगी तथा अन्य जनों को हंसने हंसाने में आपको सन्तुष्टि प्राप्त होगी। आपके समस्त शरीरांग कोमल, सुडौल एवं पुष्टता से परिपूर्ण होंगे। अपनी

मधुरवाणी से आप सबकी स्नेह पात्र रहेंगी। भोजन आप अधिक मात्रा में खाना पसन्द करेंगी। आपकी संगीत तथा नृत्य में हार्दिक रूचि होगी तथा इनके विषय में आप विषद् ज्ञान प्राप्त करेंगी।

स्त्रीलोलः सुरतोपचारकुशलताम्रेक्षणः शास्त्राविद्।
दूतः कुत्रिचद् मूर्धजः पटुमति हास्योङ्गित द्यूतवित्।।
चार्वाङ्गाः प्रियवाक् प्रभक्षण रूचिर्गीतप्रियो नृत्यवित्।
क्लीबैर्याति रतिं समुन्नतश्चन्द्रे तृतीयर्क्षगे।।
बृहज्जातकम्

लेखन प्रतिभा आपमें स्वाभाविक रूप से रहेगी अतः आप लेखन या साहित्य से लगाव रखेंगी। आपका जीवन समस्त सुखों से युक्त होकर व्यतीत होगा। किसी भी प्रकार के सुख का आप अभाव अनुभव नहीं करेंगी। आपकी हाथ की हथेली में मछली का भी चिन्ह हो सकता है। आप विषय वासनाओं की सुख में पूर्ण रूप से लिप्त रहेंगी। आपका सौन्दर्य दर्शनीय होगा परन्तु आपकी नसें बाहर से दृष्टिगोचर होंगी। सौभाग्य से भी आप हमेशा युक्त रहेंगी। आपकी आवाज भी मधुरता से युक्त होगी। आप लम्बी होगी तथा पति को वश में करने में समर्थ रहेंगी।

उन्नासश्यामचक्षु सुरतविधिकला काव्यकृद्भोग भोगी।
हस्ते मत्स्याधिपाङ्को विषय सुखरतो बुद्धिदक्षः सिरालः।।
कान्तः सौभाग्य हास्य प्रियवचनयुतः स्त्रीजितौ व्यायताङ्गो।
याति क्लीबैश्च रतिकर्म संख्यशशिनि मिथुनगे मातृयुग्मप्रपुष्टः।।
सारावली

आप दीर्घायु से युक्त रहेंगी तथा लोगों को मनोरंजन द्वारा हंसाने में आप प्रसन्नता का अनुभव करेंगी। भ्रमण या यात्रा करने की आपकी अल्प रुचि रहेगी तथा घर के अन्दर रहकर भी सामान्यतया परम सन्तुष्टि एवं मानसिक शान्ति प्राप्त करेंगी।

दीर्घायुः सुरतोपचारकुशलो हास्यप्रियो युग्मके।।
जातकपरिजातः

समाज में आपके बहुत से मित्र होंगे तथा सभी मित्रों में आप लोकप्रिय रहेंगी। अपनी सज्जनता तथा बुद्धिमानी एवं योग्यता के बल पर आप समाज में कीर्ति एवं यश को प्राप्त करेंगी।

प्रियकरः करमत्स्ययुतोनरः सुरतसौख्यभरो युवतीप्रियः।
मिथुन राशि गतौहिम गौ भवेत्सुजनतजनताकृत गौरवः।।
जातकाभरणम्

शारीरिक रूप से आप पूर्ण रूप से स्वस्थ तथा सुन्दर होंगी। आप श्लिष्ट युक्त शब्दों में बोलेंगी परन्तु अन्य जन उसे आसानी से ग्रहण करेंगे। आप अपने स्वजनों तथा

परिजनों की सेवा में हमेशा व्यस्त रहेंगी। समस्त संबंधी तथा अन्य सामाजिक लोग आपसे सहायता तथा सहयोग की अपेक्षा करेंगे। आपका आचरण श्रेष्ठ होगा तथा प्रकृति कफ-पित से युक्त होगी।

मृदुरूपचित्तगात्रः श्लिष्टविस्पष्टवाक्यः।
परजनहितकर्ता पंडितौ हास्य युक्तः।।
प्रकृति शुभचरित्रं श्लेष्मचित्त स्वभावो।
भवति मिथुन जातो गीतवाद्यानुरक्तः।।
जातक दीपिका

आप प्रिय एवं मधुर वाणी बोलेंगी जो अन्य जनों को अच्छी लगेगी। आपके नेत्र चपलता से युक्त होंगे। आप संगीत तथा नृत्य में अत्याधिक रूचि रखेंगी तथा इनकी ज्ञाता भी होंगी। आपका यश आपके धन तथा ऐश्वर्य के द्वारा व्याप्त रहेगा। आपकी दीर्घायु होगी तथा गौरवर्ण होगा। आप अपने संकल्प के प्रति दृढ़ निश्चियी होंगी तथा भाषण देने की कला में भी निपुण होगी। आप सामान्यतया सम्पूर्ण कार्यों को सम्पन्न करने में समर्थ रहेंगी तथा न्याय का भी समर्थन करेंगी।

मृदुवाक्यो लोलदृष्टिर्दयालु मैथुनप्रियः।
गान्धर्ववित् कासरोगी कीर्तिभोगी धनी गुणी।।
गौरोदीर्घः पटुर्वक्ता मेधावी च दृढव्रतः।
समर्थो न्यायवादी च जायते मिथुने जनः।।
मानसागरी

आप देव गण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आप की वाणी सुन्दर, सुमधुर एवं श्रेष्ठता से युक्त होगी। आप हमेशा सत्यभाषण करेंगी तथा आजीवन सत्य के मार्ग अनुपालन हेतु सदैव प्रयत्नशील रहेंगी। आपकी मुख्य विशेषता यह होगी कि आप सादगी पूर्ण ढंग से अपने विचारों को प्रकट करेंगी तथा उसी प्रकार अन्यजनों के विचारों को भी आत्मसात् करेंगी। आप सात्विक भोजन करना पसन्द करेंगी गुणों की पूर्ण रूप से पारखी होंगी तथा महान विद्वानों द्वारा प्रतिपादित श्रेष्ठगुणों से आप सम्पन्न होंगी। आप सम्पूर्ण सुख तथा वैभव से युक्त रहेंगी तथा धनैश्वर्य के विपुल भण्डार की आप स्वामिनी रहेंगी।

आप स्वस्थ शरीर की दर्शनीय महिला होंगी। दानशीलता की प्रवृति से आप युक्त रहेंगी तथा समयानुसार इस प्रवृति का यत्न से पालन करेंगी। आप सादगी पसन्द होंगी तथा व्यर्थ के दिखावे से दूर ही रहेंगी। आप एक विदुषी के रूप में भी प्रसिद्ध होंगी।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में

भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

सर्प योनि में जन्म लेने के कारण आप का स्वभाव कभी कभी अत्यन्त क्रोधी होगा चंचलता की भी आपकी प्रवृति में बहुलता रहेंगी। तथा चटपटे, खट्टे, मीठे, तीखे स्वादों की भी आप अत्यन्त लोलुप रहेंगी।

दीर्घरोषो महाक्रूरः कृतघ्नश्च भवेन्नरः।
चपलो रसना लोलः सर्प योनौ न संशयः।।
मानसागरी

अर्थात् सर्प योनि में उत्पन्न जातक महाक्रोधी, महाक्रूर, कृतघ्न, चंचल तथा जीभ का लोलुप होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा सप्तम भाव में स्थित है। अतः माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में प्यार एवं स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगी एवं जीवन में आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगी। आपकी शादी करने में भी उनका विशेष सहयोग रहेगा तथा आपको व्यापारादि कार्यों में भी पूर्ण आर्थिक या अन्य रूप से सहयोग तथा प्रोत्साहन देंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धालु रहेंगी एवं हमेशा उनका हार्दिक सम्मान करेंगी। उनकी बातों से आप प्रायः सहमत रहेंगी तथा उसका पालन करने के लिए भी तत्पर रहेंगी। आपके मध्य कभी कभी सैद्धान्तिक मतभेदों की भी उत्पत्ति होगी जिसके कारण कभी कभी अप्रिय स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है। परन्तु कुल मिलाकर आपसी संबंध अच्छे रहेंगे तथा एक दूसरें का सहयोग करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी पूर्ण रहेगी। धनैश्वर्य से वे सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में आपको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही आपके आजीविका या व्यापार संबंधी कार्य भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहायता से सम्पन्न होंगे एवं आप इन कार्यों में वांछित सफलता अर्जित कर सकेंगी।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध प्रायः मधुर ही रहेंगे तथापि यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। जीवन में आप पिता को अपनी ओर से पूर्ण आर्थिक सहायता प्रदान करेंगी एवं सुख दुःख में सर्वदा उनका सहयोग करेंगी।

आपके जन्म समय में मंगल एकादश में विद्यमान है अतः भाई बहिनों से आप स्नेह एवं सम्मान प्राप्त करेंगी एवं जीवन के शुभ एवं महत्वपूर्ण क्षेत्रों में उनसे पूर्ण सहयोग तथा समयानुसार वांछित सहायता भी अजित करेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य प्रायः अच्छा ही रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी उनको अनुभूति होगी। आपके आय साधनों की वृद्धि

में भी उनका प्रमुख योगदान रहेगा। धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में सुख दुःख के समय आपकी यथा शक्ति सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगे।

आपके अर्न्तमन में उनके प्रति स्नेह भाव रहेगा तथा जीवन में यथाशक्ति उनकी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपनी ओर से वांछित आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे। आपके आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इनमें कटुता का भाव उत्पन्न होगा। परन्तु यह क्षणिक रहेगा। इसके अतिरिक्त आप सुख दुःख में भी अपना योगदान प्रदान करेंगी।

आपके लिए आषाढ़ मास, द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी तिथियां, स्वाती नक्षत्र, परिघयोग, सोमवार, तृतीय प्रहर तथा धनु राशिस्थ चन्द्रमा अशुभ फलों को प्रदान करने वाले हैं। अतः आप 15 जून से 14 जुलाई के मध्य 2,7,12 तिथियों, स्वाती नक्षत्र, परिघयोग में कोई भी शुभ कार्य सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही सोमवार, तृतीय प्रहर तथा धनु राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों में शारीरिक सुरक्षा का भी पूर्ण रूप से ध्यान रखें।

यदि आपके लिए समय अनुकूल न चल रहा हो मानसिक या शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या प्रोन्नति में बाधाएं आ रही हों तो ऐसे समय में आपको प्रातः तथा सायं काल नियमित रूप से गणेश जी के दर्शन करने चाहिए तथा बुधवार के उपवास रखने हर चाहिए। साथ ही हरा वस्त्र, पन्ना, मिश्री, घी, गुड़ इत्यादि पदार्थों का दान करना चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों में भी न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त बुध के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 17000 जप किसी विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए।

ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रों सः बुधाय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं स्त्रीं श्रीं बुधाय नमः।